फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा (क़िस्त़ : 11)

Naam Kaise Rakhe Jaaen (Hindi)

नाम कैसे रखे जाएं ?

(मअ़ दीगर दिलचस्प सुवाल व जवाब)

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी)**

येह रिसाला शैखे़ त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी र-ज़वी** دامت برکاتہم العالیہ के म-दनी मुज़ा-करे की रोशनी में मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बे "फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा" की त़रफ़ से नए मवाद के काफ़ी इज़ाफ़े के साथ मुरत्तब किया गया है।

(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा । दुआ येह है :

اَللّٰهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَانْشُرْ
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِكْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इल्मो ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले ।

(المُستطرَف ج١ص٤٠ دارالفكر بيروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये ।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत

13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

क़ियामत के रोज़ ह़सरत

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : सब से ज़ियादा ह़सरत क़ियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में इल्म ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला मगर उस ने ह़ासिल न किया और उस शख़्स को होगी जिस ने इल्म ह़ासिल किया और दूसरों ने तो उस से सुन कर नफ़्अ़ उठाया लेकिन इस ने न उठाया (या'नी उस इल्म पर अ़मल न किया) ।

(تاريخ دمشق لابن عَساكِر ج٥١ص١٣٨ دارالفكر بيروت)

किताब के ख़रीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की त़बाअ़त में नुमायां ख़राबी हो या सफ़ह़ात कम हों या बाइन्डिंग में आगे पीछे हो गए हों तो **मक-त-बतुल मदीना** से रुजूअ़ फ़रमाइये ।

www.dawateislami.net

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

येह रिसाला **''नाम कैसे रखे जाएं ?''**

दा'वते इस्लामी की मजलिस **''अल मदीनतुल इल्मिय्या** (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)'' ने **उर्दू** ज़बान में मुरत्तब किया है। मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त में तरतीब दे कर पेश किया है और **मक-त-बतुल मदीना** से शाएअ करवाया है।

इस रिसाले को हिन्दी रस्मुल ख़त में तरतीब देते हुए दर्जे ज़ैल मुआ-मलात को पेशे नज़र रखने की कोशिश की गई है :

(1) क़रीबुस्सौत (या'नी मिलती जुलती आवाज़ वाले) हुरूफ़ के आपसी इम्तियाज़ (या'नी फ़र्क़) को वाज़ेह करने के लिये हिन्दी के चन्द मख़्सूस हुरूफ़ के नीचे डॉट (.) लगाने का ख़ुसूसी एहतिमाम किया गया है। मा'लूमात के लिये **''हुरूफ़ की पहचान''** नामी चार्ट मुला-हज़ा फ़रमाइये।

(2) जहां जहां तलफ़्फ़ुज़ के बिगड़ने का अन्देशा था वहां तलफ़्फ़ुज़ की दुरुस्त अदाएगी के लिये जुम्लों में डेश (-) और साकिन हर्फ़ के नीचे खोड़ा (़) लगाने का एहतिमाम किया गया है।

(3) उर्दू में लफ़्ज़ के बीच में जहां ع साकिन आता है उस की जगह हिन्दी में सिंगल इन्वर्टेड कोमा (') इस्ति'माल किया गया है। म-सलन دعوت،استعمال (दा'वत, इस्ति'माल वग़ैरा)।

इस किताब में अगर किसी जगह कमी बेशी या ग़-लती पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअए मक्तूब, E-mail या SMS) मुत्तलअ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

www.dawateislami.net

हुरूफ़ की पहचान

फ = پھ	प = پ	भ = بھ	ब = ب	अ = ا
स = ث	ठ = ٹھ	ट = ٹ	थ = تھ	त = ت
ह़ = ح	छ = چھ	च = چ	झ = جھ	ज = ج
ढ = ڈھ	ड = ڈ	ध = دھ	द = د	ख़ = خ
ज़ = ز	ढ़ = ڑھ	ड़ = ڑ	र = ر	ज़ = ذ
ज़ = ض	स = ص	श = ش	स = س	ज़ = ژ
फ़ = ف	ग़ = غ	अ़ = ع	ज़ = ظ	त़ = ط
घ = گھ	ग = گ	ख = کھ	क = ک	क़ = ق
ह = ہ	व = و	न = ن	म = م	ल = ل
ई = اِی / ِی	इ = اِ	ऐ = اَے	ए = ے	य = ی

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी)

मक-त-बतुल मदीना, सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,

तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद-1, गुजरात

MO. 9374031409 ´ E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

www.dawateislami.net

पहले इसे पढ़ लीजिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीगे़ कुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर गै़र सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के बानी, शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने अपने मख़्सूस अन्दाज़ में सुन्नतों भरे बयानात, इल्मो ह़िक्मत से मा'मूर म-दनी मुज़ा-करात और अपने तरबियत याफ़्ता मुबल्लिग़ीन के ज़रीए थोड़े ही अ़र्से में लाखों मुसल्मानों के दिलों में म-दनी इन्क़िलाब बरपा कर दिया है, आप دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की सोह़बत से फ़ाएदा उठाते हुए कसीर इस्लामी भाई वक़्तन फ़ वक़्तन मुख़्तलिफ़ मक़ामात पर होने वाले म-दनी मुज़ा-करात में मुख़्तलिफ़ क़िस्म के मौज़ूआ़त म-सलन अ़क़ाइद व आ'माल, फ़ज़ाइल व मनाक़िब, शरीअ़त व त़रीक़त, तारीख़ व सीरत, साइन्स व त़िब, अख़्लाक़िय्यात व इस्लामी मा'लूमात, रोज़ मर्रा मुआ़-मलात और दीगर बहुत से मौज़ूआ़त से मु-तअ़ल्लिक़ सुवालात करते हैं और शैख़े त़रीक़त अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه उन्हें ह़िक्मत आमोज़ और इ़श्क़े रसूल में डूबे हुए जवाबात से नवाज़ते हैं।

अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه के इन अ़त़ा कर्दा दिलचस्प और इल्मो ह़िक्मत से लबरेज़ म-दनी फूलों की ख़ुश्बूओं से दुन्या भर के मुसल्मानों को महकाने के मुक़द्दस जज़्बे के तह़्त अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का शो'बा **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** इन म-दनी मुज़ा-करात को काफ़ी तरमीम व इज़ाफ़ों के साथ **''फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा''** के नाम से पेश करने की सआ़दत ह़ासिल कर रहा है। इन तह़रीरी गुलदस्तों का मुत़ा-लआ़ करने से اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ अ़क़ाइदो आ'माल और ज़ाहिरो बात़िन की इस्लाह़, मह़ब्बते इलाही व इ़श्क़े रसूल की ला ज़वाल दौलत के साथ साथ मज़ीद हुसूले इ़ल्मे दीन का जज़्बा भी बेदार होगा।

इस रिसाले में जो भी ख़ूबियां हैं यक़ीनन रब्बे रह़ीम عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की अ़त़ाओं, औलियाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام की इ़नायतों और अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की शफ़्क़तों और पुर ख़ुलूस दुआ़ओं का नतीजा हैं और ख़ामियां हों तो उस में हमारी गै़र इरादी कोताही का दख़्ल है।

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या
(शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)
8 जुमादिल आख़िर 1436 सि.हि.\ 29 मार्च 2015 सि.ई.

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ؕ

नाम कैसे रखे जाएं ?

शैत़ान लाख सुस्ती दिलाए येह रिसाला (43 सफ़ह़ात) मुकम्मल पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰه عَزَّوَجَلَّ मा'लूमात का अनमोल ख़ज़ाना हाथ आएगा ।

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

शहन्शाहे ख़ुश ख़िसाल, पैकरे हुस्नो जमाल, दाफ़ेए रन्जो मलाल, साहिबे जूदो नवाल, रसूले बे मिसाल, बीबी आमिना के लाल صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने रह़मत निशान है : "मेरा जो उम्मती इख़्लास के साथ मुझ पर एक मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ेगा **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उस पर दस रह़मतें नाज़िल फ़रमाएगा, उस के दस द-रजात बुलन्द फ़रमाएगा, उस के लिये दस नेकियां लिखेगा और उस के दस गुनाह मिटा देगा ।"[1]

صَلُّوْا عَلَى الْحَبِيْب ! صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلٰى مُحَمَّد

नाम कैसे रखे जाएं ?

अ़र्ज़ : बच्चों के नाम कैसे रखने चाहिएं ?

इर्शाद : वालिदैन को चाहिये कि वोह अपने बच्चे का अच्छा नाम

مدینہ

1 ... سنن کبریٰ للنسائی، کتاب عمل الیوم واللیلۃ، ثواب الصلاۃ علی النبی، ۶/۲۱-۲۲، حدیث: ۹۸۹۲

www.dawateislami.net

रखें कि येह उन की त़रफ़ से अपने बच्चे के लिये सब से पहला और बुन्यादी तोह़फ़ा है जिसे बच्चा उ़म्र भर अपने सीने से लगाए रखता है यहां तक कि क़ियामत के दिन उसी नाम से पुकारा जाएगा चुनान्चे ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ मह़शर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्त वर है : आदमी सब से पहला तोह़फ़ा अपने बच्चे को नाम का देता है इस लिये चाहिये कि वोह उस का अच्छा नाम रखे ।[1] एक और ह़दीसे पाक में इर्शाद फ़रमाया : बेशक क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो ।[2]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! इन अह़ादीसे मुबा-रका से उन लोगों को इ़ब्रत ह़ासिल करनी चाहिये जो अपने बच्चे का नाम किसी फ़िल्मी अदाकार या مَعَاذَ اللہ عَزَّوَجَلَّ कुफ़्फ़ार के नाम पर रख देते हैं, इस से बड़ी ज़िल्लत और क्या होगी कि कल मैदाने मह़शर में मुसल्मान की औलाद को कुफ़्फ़ार के नामों से पुकारा जाए । बच्चे का अच्छा नाम रखना वालिदैन की अव्वल तरीन ज़िम्मादारी है और येह वालिदैन की त़रफ़ से बच्चे के लिये पहला तोह़फ़ा होता है मगर बद क़िस्मती से आज हमारे मुआ़-शरे में वालिदैन खु़द अपने बच्चों के नाम रखने के बजाए दूसरे रिश्तेदारों पर येह ज़िम्मादारी आ़इद

مدینہ

1... جمع الجوامع، الاکمال من الجامع الکبیر، حرف الھمزۃ، ۳/۲۸۵، حدیث: ۸۸۷۵

2... ابو داود، کتاب الأدب، باب فی تغییر الاسماء، ۴/۳۷۴، حدیث: ۴۹۴۸

www.dawateislami.net

कर देते हैं, इल्मे दीन से दूरी और जहालत के सबब बच्चों के ऐसे नाम रख दिये जाते हैं जो शरअ़न ना जाइज़ होते हैं या जिन के कोई मा'ना नहीं होते या फिर अच्छे मा'ना नहीं होते या ऐसे नाम होते हैं जिन में ग़ुरूरो तकब्बुर पाया जाता है। **याद रखिये !** अच्छे नाम का अच्छा और बुरे नाम का बुरा असर होता है लिहाज़ा बुरे नाम से बचते हुए अपने बच्चों के नाम अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام, सह़ाबए किराम व औलियाए इ़ज़ाम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان के मुबारक नामों पर रखने चाहिएं ताकि बच्चों का अपने अस्लाफ़ से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो और इन नेक हस्तियों की ब-र-कत से इस की ज़िन्दगी पर म-दनी अ-सरात मुरत्तब हों। मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : अच्छे नाम का असर नाम वाले पर पड़ता है, अच्छा नाम वोह है जो बे मा'ना न हो जैसे बुधवा, तल्वा वग़ैरा और फ़ख़्रो तकब्बुर न पाया जाए जैसे बादशाह, शहन्शाह वग़ैरा और न बुरे मा'ना हों जैसे आ़सी वग़ैरा। बेहतर येह है कि अम्बियाए किराम (عَلَيْهِمُ السَّلَام) या हुज़ूर عَلَيْهِ السَّلَام के सह़ाबए उ़ज़्ज़ाम, अहले बैते अत़्हार (رِضْوَانُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْهِمْ اَجْمَعِيْن) के नामों पर नाम रखे जैसे इब्राहीम, इस्माईल, उ़स्मान, अ़ली, हुसैन व ह़सन वग़ैरा। औ़रतों के नाम आसिया, फ़ातिमा, आ़इशा वग़ैरा और जो अपने बेटे का नाम मुह़म्मद रखे वोह اِنْ شَآءَاللّٰه

www.dawateislami.net

बख़्शा जाएगा और दुन्या में इस की ब-रकात देखेगा।[1]

"मुह़म्मद और अह़मद" नाम रखने के फ़ज़ाइल

अ़र्ज़ : इस्लामी भाई आप से अपने नौ मौलूद बच्चों के नाम रखवाते हैं तो आप बच्चे का नाम "मुह़म्मद या अह़मद" रखते हैं इस में क्या ह़िक्मत है ?

इर्शाद : "मुह़म्मद" और "अह़मद" हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाती अस्माए मुबा-रका हैं, अह़ादीसे मुबा-रका में इन के बड़े फ़ज़ाइलो ब-रकात बयान हुए हैं, चुनान्चे इन अस्माए मुबा-रका के 4 ह़ुरूफ़ की निस्बत से चार अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत, मालिके कौसरो जन्नत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने जन्नत निशान है : जिस के हां लड़का पैदा हो पस वोह मेरी मह़ब्बत और मेरे नाम से ब-र-कत ह़ासिल करने के लिये उस का नाम "मुह़म्मद" रखे वोह और उस का लड़का दोनों जन्नत में जाएं।[2]

(2) मह़बूबे रब्बुल इ़ज़्ज़त, पैकरे जूदो सख़ावत, क़ासिमे ने'मत صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने ब-र-कत निशान है : जिस ने मेरे नाम से ब-र-कत की उम्मीद करते हुए मेरे नाम पर

1...... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 5, स. 30

2... كَنْزُ الْعُمَّال، كتاب النكاح، الباب السابع فی برّ الْاَولاد و حقوقهم، الفصل الاول، الجزء:١٦، ٨/١٧٥، حديث:٤٥٢١٥

www.dawateislami.net

नाम रखा, क़ियामत तक सुब्हो शाम इस पर ब-र-कत नाज़िल होती रहेगी ।[1]

(3) **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए गुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : क़ियामत के दिन दो शख़्स **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर खड़े किये जाएंगे, हुक्म होगा इन्हें जन्नत में ले जाओ । अ़र्ज़ करेंगे : **या अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ **!** हम किस अ़मल के सबब जन्नत के क़ाबिल हुए ह़ालां कि हम ने तो जन्नत का कोई काम किया ही नहीं ? तो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ इर्शाद फ़रमाएगा : जन्नत में जाओ, मैं ने ह़ल्फ़ किया है कि जिस का नाम "मुह़म्मद या अह़मद" होगा दोज़ख़ में न जाएगा ।[2]

(4) सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : कोई दस्तर ख़्वान बिछाया नहीं गया कि उस पर ऐसा शख़्स तशरीफ़ लाए जिस का नाम "मुह़म्मद या अह़मद" हो तो हर रोज़ दो बार उस घर को तक़द्दुस बख़्शा जाता है (या'नी पाक किया जाता है) ।[3]

मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान

मدینہ

1... كَنْزُ الْعُمّال، كتاب النكاح، الباب السابع فی برّ الْاَولاد و حقوقهم، الفصل الاول، الجزء:١٦، ٨/١٧۵، حديث:۴۵٢١٣

2... فردوس الاخبار، باب الياء، فصل فی تفسير آي من القرآن الكريم، ٢/۵٠٣، حديث: ٨۵١۵

3... فردوس الاخبار، فصل ذكر فصول فی (ما من) وغيره، ٢/٣٢٣، حديث: ۶۵٢۵

www.dawateislami.net

عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن नामे अक़्दस की एक ब-र-कत नक़्ल करते हुए इर्शाद फ़रमाते हैं : जो चाहे कि इस की औ़रत के ह़म्ल में लड़का हो तो उसे चाहिये कि अपना हाथ औ़रत के पेट पर रख कर कहे : '' اِنْ كَانَ ذَكَرًا فَقَدْ سَمَّيْتُهٗ مُحَمَّدًا '' अगर लड़का है तो मैं ने इस का नाम मुह़म्मद रखा ।'' اِنْ شَآءَ اللّٰهُ الْعَزِيْز लड़का ही होगा ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के नामे पाक की कितनी ब-र-कतें और फ़ज़ीलतें हैं, इन ब-र-कतों और फ़ज़ीलतों को पाने के लिये आप भी अपने बच्चों के नाम ''मुह़म्मद या अह़मद'' रखिये और इस नामे पाक की निस्बत के सबब इन की इ़ज़्ज़तो तक्रीम भी कीजिये कि ह़दीसे पाक में है : जब लड़के का नाम ''मुह़म्मद'' रखो तो उस की इ़ज़्ज़त करो और मजलिस में उस के लिये जगह कुशादा करो और उसे बुराई की त़रफ़ निस्बत न करो ।[2] हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحِمَهُمُ اللّٰهُ الْمُبِيْن इस नाम का कितना अ-दबो एह़तिराम करते थे इस का अन्दाज़ा इस ह़िकायत से लगाइये चुनान्चे

ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्त़ान मह़मूद ग़ज़्नवी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللّٰهِ الْقَوِی (बहुत बड़े आ़शिक़े रसूल बादशाह थे उन्हों) ने एक बार दौराने गुफ़्त-गू (अपने वज़ीर) अयाज़ के बेटे को ''ऐ अयाज़

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 690

2 ... جامع صغیر، حرف الھمزۃ، ص۴۹، حدیث:۷۰۶

www.dawateislami.net

के लड़के !" कह कर मुख़ातब किया । वोह घबरा गया और अपने वालिद साहिब (अयाज़) की ख़िदमत में अ़र्ज़ की, कि मा'लूम होता है कि मेरी किसी ख़ता के सबब बादशाह सलामत मुझ से नाराज़ हो गए हैं जो मुझे आज "अयाज़ का लड़का" कहा, वरना हमेशा बड़े अदब से मेरा नाम लेते रहे हैं । अयाज़ ने आप رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ की ख़िदमत में हाज़िर हो कर बेटे के इस ख़दशे का इज़्हार किया, तो ह़ज़रते सय्यिदुना सुल्तान महमूद गज़्नवी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने इर्शाद फ़रमाया : अयाज़ ! तुम्हारे बेटे का नाम "अह़मद" है और येह नाम बहुत ही अ़-ज़मत वाला है लिहाज़ा मैं येह नाम कभी बे वुज़ू नहीं लेता, इत्तिफ़ाक़न मैं उस वक़्त बे वुज़ू था इस लिये नाम लेने के बजाए मजबूरन "अयाज़ का लड़का" कह कर मुझे बात करनी पड़ी ।[1]

नामे अक़्दस के साथ कोई दूसरा नाम न मिलाइये

अ़र्ज़ : नामे अक़्दस के साथ कोई दूसरा नाम मिलाया म-सलन "मुह़म्मद हुसैन" या "गुलाम मुह़म्मद" तो क्या इस सूरत में भी मज़्कूरा फ़ज़ाइल ह़ासिल होंगे ?

इर्शाद : "मुह़म्मद या अह़मद" नाम रखने के फ़ज़ाइलो ब-रकात उसी वक़्त ह़ासिल होंगे जब इन के साथ कोई दूसरा नाम न मिलाया जाए क्यूं कि अह़ादीसे मुबा-रका में इर्शाद फ़रमूदा फ़ज़ाइल तन्हा "मुह़म्मद" और "अह़मद" रखने के हैं

مدینہ

1 ... روح البیان، پ۲۲، الاحزاب، تحت الآیۃ: ۴۰، ۷/۱۸۵

www.dawateislami.net

चुनान्चे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : बेहतर येह है कि सिर्फ़ मुह़म्मद या अह़मद नाम रखे, इस के साथ जान वग़ैरा और कोई लफ़्ज़ न मिलाए कि फ़ज़ाइल तन्हा इन्हीं अस्माए मुबा-रका के वारिद हुए हैं ।[1]

तस्ग़ीर से बचने का त़रीक़ा

अ़र्ज़ : अगर मुह़म्मद नाम रखने में तस्ग़ीर का अन्देशा हो तो फिर क्या करना चाहिये ?

इर्शाद : अगर मुह़म्मद नाम रखन में तस्ग़ीर (या'नी नाम को इस त़रह़ बिगाड़ना जिस से ह़क़ारत निकलती हो) का अन्देशा हो तो फिर येह नाम नहीं रखना चाहिये, अलबत्ता तस्ग़ीर से बचने की एक सूरत येह है कि अ़क़ीक़े वाले दिन नाम ''मुह़म्मद'' रखें मगर उ़र्फ़ (या'नी पुकारने के लिये) कोई और नाम रख लें जैसा कि सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : मुह़म्मद बहुत प्यारा नाम है, इस नाम की बड़ी ता'रीफ़ ह़दीसों में आई है। अगर तस्ग़ीर का अन्देशा न हो तो येह नाम रखा जाए और एक सूरत येह है कि अ़क़ीक़ा का येह नाम हो (या'नी अ़क़ीक़े वाले दिन नाम ''मुह़म्मद'' रख दिया जाए) और पुकारने के लिये कोई दूसरा नाम तज्वीज़ कर लिया जाए और हिन्दूस्तान में ऐसा बहुत होता है कि एक शख़्स के

مدینہ

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 24, स. 691

www.dawateislami.net

कई नाम होते हैं, इस सूरत में नाम की भी ब-र-कत होगी और तस्ग़ीर से भी बच जाएंगे ।[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ मेरी येही आ़दत है कि हुसूले ब-र-कत के लिये नौ मौलूद का नाम ''मुह़म्मद या अह़मद'' तज्वीज़ करता हूं मगर कुछ न कुछ उ़र्फ़ भी रख देता हूं ताकि उस बच्चे को उ़र्फ़ से पुकारा जाए और नामे अक़्दस की बे अ-दबी का अन्देशा न रहे ।[2]

त़ाहा और यासीन नाम रखना कैसा ?

अ़र्ज़ : त़ाहा, यासीन नाम रखना कैसा है ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 605 पर है : ''त़ाहा, यासीन नाम भी न रखे जाएं कि येह मुक़त्त़आ़ते क़ुरआनिया से हैं जिन के मा'ना मा'लूम नहीं ज़ाहिर येह है कि येह अस्माए नबी صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم से हैं और बा'ज़ उ़-लमा ने अस्माए इलाहिय्यह से कहा । बहर ह़ाल जब मा'ना मा'लूम नहीं तो हो सकता है कि इस के ऐसे मा'ना हों जो हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم या **अल्लाह** तआ़ला के साथ ख़ास हों और इन नामों के साथ मुह़म्मद मिला कर मुह़म्मद त़ाहा, मुह़म्मद यासीन कहना भी मुमा-न-अ़त को दफ़्अ़ न करेगा ।''

مدینہ

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 15, स. 356

2 ..... शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ ने अपने बड़े साह़िब ज़ादे का नाम ''अह़मद'' और उ़र्फ़ ''उ़बैद रज़ा'' जब कि छोटे साह़िब ज़ादे का नाम ''मुह़म्मद'' और उ़र्फ़ ''बिलाल रज़ा'' रखा है । (शो'बए फ़ैज़ाने म-दनी मुज़ा-करा)

www.dawateislami.net

किसी को "लम्बा, ठिगना, अन्धा" कहना कैसा ?

अ़र्ज़ : किसी को "लम्बा, ठिगना, अन्धा या बुध्धू" कह कर पुकारना कैसा है ?

इर्शाद : किसी मुसल्मान को ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना जिन से उस की बुराई निकलती और दिल शि-कनी होती हो येह ना जाइज़ व ह़राम है, क़ुरआने करीम और अह़ादीसे मुबा-रका में इस की मुमा-न-अ़त आई है चुनान्चे पारह 26 **सू-रतुल ह़ुजुरात** की आयत नम्बर 11 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

وَلَا تَنَابَزُوْا بِالْاَلْقَابِؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और एक दूसरे के बुरे नाम न रखो ।

इस आयते करीमा के तह़्त सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना सय्यिद मुह़म्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِى फ़रमाते हैं : "ह़ज़रते इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने फ़रमाया कि अगर किसी आदमी ने किसी बुराई से तौबा कर ली हो उस को बा'दे तौबा उस बुराई से आ़र दिलाना भी इस नह्य में दाख़िल और मम्नूअ़ है। बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि किसी मुसल्मान को कुत्ता या गधा या सुवर कहना भी इसी में दाख़िल है। बा'ज़ उ़-लमा ने फ़रमाया कि इस से वोह अल्क़ाब मुराद हैं जिन से मुसल्मान की बुराई निकलती हो और उस को ना गवार हो लेकिन ता'रीफ़ के अल्क़ाब जो सच्चे हों, मम्नूअ़ नहीं जैसे कि

www.dawateislami.net

ह़ज़रते अबू बक्र का लक़ब ''अ़तीक़'' और ह़ज़रते उ़मर का ''फ़ारूक़'' और ह़ज़रते उ़स्माने ग़नी का ''ज़ुन्नूरैन'' और ह़ज़रते अ़ली का ''अबू तुराब'' और ह़ज़रते ख़ालिद का ''सैफ़ुल्लाह'' رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡھُم और जो अल्क़ाब ब मन्ज़िलए अ़लम (नाम के क़ाइम मक़ाम) हो गए और साहि़बे अल्क़ाब को ना गवार नहीं वोह अल्क़ाब भी मम्नूअ़ नहीं जैसे कि आ'मश (कम बीनाई वाला) आ'रज (लंगड़ा) ।''

इसी त़रह़ अह़ादीसे मुबा-रका में भी बुरे नामों से पुकारने की मुमा-न-अ़त आई है चुनान्चे नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ़-लमिय्यान, सरदारे दो जहान, मह़बूबे रह़मान صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने हिदायत निशान है : अपने भाइयों को उन के अच्छे नामों से पुकारो, बुरे नामों से न पुकारो ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! मा'लूम हुवा कि किसी मुसल्मान को ऐसे नाम से पुकारना जिस से उस की बुराई ज़ाहिर होती हो येह ना जाइज़ व ह़राम है लिहाज़ा किसी को लम्बा, ठिगना, अन्धा या बुध्धू वग़ैरा कह कर नहीं पुकार सकते । अगर किसी से येह ख़त़ा सरज़द हुई हो तो उसे चाहिये कि वोह अपने उस मुसल्मान भाई से मुआ़फ़ी मांग कर उसे राज़ी कर ले । बा'ज़ अवक़ात लोग अपना ऐसा नाम सुन कर खिस्यानी हंसी हंसते हैं जिस से पुकारने वाले येह समझते हैं कि येह नाराज़ नहीं होते ह़ालां कि उन की दिल

1... کنز العمّال، کتاب النکاح، الباب السابع فی برّ الاولاد و حقوقھم، الفصل الاول، الجزء:۱۶، ۸/۱۷۵، حدیث:۴۵۲۱۱

www.dawateislami.net

शि-कनी हो रही होती है मगर वोह ज़ाहिर नहीं होने देते। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : किसी मुसल्मान बल्कि काफ़िर ज़िम्मी को भी बिला ह़ाजते शरइ़य्या ऐसे अल्फ़ाज़ से पुकारना या ता'बीर करना जिस से उस की दिल शि-कनी हो उसे ईज़ा पहुंचे, शरअ़न ना जाइज़ व ह़राम है अगर्चे बात फ़ी नफ़्सिही सच्ची हो, فَاِنَّ كُلَّ حَقٍّ صِدْقٌ وَلَيْسَ كُلُّ صِدْقٍ حَقًّا (हर ह़क़ सच है मगर हर सच ह़क़ नहीं)[1]

इमामे आ'ज़म को "अबू ह़नीफ़ा" कहने की वज्ह

अ़र्ज़ : इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم को "अबू ह़नीफ़ा" क्यूं कहा जाता है ?

इर्शाद : "अबू ह़नीफ़ा" सिराजुल उम्मह, इमामुल अइम्मह, काशिफ़ुल ग़ुम्मह ह़ज़रते सय्यिदुना इमामे आ'ज़म عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْاَكْرَم की कुन्यत है। इस कुन्यत की वज्ह बयान करते हुए मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं : ह़नीफ़ अवराक़ को कहते हैं। हुज़ूर को इब्तिदा ही से लिखने का बहुत शौक़ था।[2] इसी सबब से आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه "अबू ह़नीफ़ा" मश्हूर हुए।

मदीना

1 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 23, स. 204
2 ..... मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 428

www.dawateislami.net

कुन्यत की ता'रीफ़

अ़र्ज़ : कुन्यत किसे कहते हैं ? नीज़ कुन्यत रखना कैसा है ?

इर्शाद : कुन्यत से मुराद वोह नाम है जो ''अब, उम, इब्ने या इब्नह'' से शुरूअ़ हो ।[1] कुन्यत रखना सुन्नत है, हमारे मीठे मीठे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की कुन्यत अपने शहज़ादए गिरामी ह़ज़रते सय्यिदुना क़ासिम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه की निस्बत से ''अबुल क़ासिम'' है । اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मैं ने भी अदाए सुन्नत की निय्यत से अपने बेटे के उ़र्फ़ ''बिलाल रज़ा'' की निस्बत से अपनी कुन्यत ''अबू बिलाल'' रखी है ।

क्या बच्चे की कुन्यत भी रख सकते हैं ?

अ़र्ज़ : क्या बच्चों की कुन्यत भी रख सकते हैं ?

इर्शाद : जी हां ! छोटे बच्चों की कुन्यत भी रख सकते हैं बल्कि ह़दीसे पाक में बच्चों की कुन्यत रखने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई गई है जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه से रिवायत है कि ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए महशर, महबूबे दावर صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने बख़्त वर है : अपने बच्चों की कुन्यत रखने में जल्दी करो कहीं उन के (बुरे) अल्क़ाब न पड़ जाएं ।[2]

---

1 ... کتاب التعریفات، باب الکاف، تحت اللفظ: الکنیۃ، ص ۱۳۲

2 ... کَنْزُ الْعُمّال، کتاب النکاح، الباب السابع فی برّ الْاَولاد وحقوقھم، الفصل الاول، الجزء:۱۶، ۱۷۶/۸، حدیث: ۴۵۲۲۲

www.dawateislami.net

इस ह़दीसे पाक के तह़्त ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुर्रऊफ़ मनावी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : इस रिवायत में इस बात की तरग़ीब दिलाई गई है कि अपने बच्चों के लिये कम उ़म्री में ही कोई अच्छी कुन्यत रख दी जाए, बा'ज़ अवक़ात एक ही नाम कई अफ़्राद में मुश्तरक होता है और इस सूरत में लोग ऐसे शख़्स को बुलाने के लिये कोई न कोई लक़ब रख देते हैं जो कि अक्सर बुरा होता है। बच्चे की कुन्यत रखने का फ़ाएदा येह होगा कि जब वोह बड़ा होगा तो येह कुन्यत उसे बुलाने के लिये इस्ति'माल होगी और कोई उस का बुरा लक़ब नहीं रखेगा।[1]

सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्तरीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : बच्चे की कुन्यत हो सकती है या नहीं सह़ीह़ येह है कि हो सकती है, ह़दीस अबी उ़मैर[2] इस की दलील है।[3] अमीरुल

---

1 ... فیض القدیر، حرف الباء، ۳/۲۵۱، تحت الحدیث: ۳۱۱۶ ملخصاً

2 ..... ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم हमारे पास तशरीफ़ लाया करते थे, मेरा एक छोटा भाई था जिस की कुन्यत अबू उ़मैर थी, उस ने एक चिड़िया पाल रखी थी जिस से वोह खेला करता था, वोह चिड़िया मर गई, फिर एक दिन सरकार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए, उसे ग़मगीन देख कर वज्ह पूछी, अ़र्ज़ की गई कि इस की चिड़िया मर गई है तो आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''اَبَا عُمَیْرٍ! مَا فَعَلَ النُّغَیْر'' ऐ अबू उ़मैर ! नुग़ैर (चिड़िया के मुशाबेह एक सुर्ख़ चोंच वाला परिन्दा) ने क्या किया है ?
(ابو داود، کتاب الادب، باب ماجاء فی الرجل یتکنی ولیس لہ ولد، ۴/۳۸۱، حدیث: ۴۹۶۹)

3 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 16, स. 603

www.dawateislami.net

मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की बचपन ही से कुन्यत "अबू बक्र" है जब कि इन का अस्ल नाम "अ़ब्दुल्लाह" है ।[1]

क्या औ़रत भी कुन्यत रख सकती है ?

अ़र्ज़ : क्या औ़रत भी कुन्यत रख सकती है ?

इर्शाद : जी हां । औ़रत भी कुन्यत रख सकती है । हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी तमाम अज़्वाजे मु-तह्हरात رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ की कुन्यत रखी है जैसा कि उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْھَا से रिवायत है कि उन्हों ने बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ की, कि आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मेरे इ़लावा अपनी तमाम अज़्वाजे मुत़ह्हरात (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ) की कुन्यत रखी है । आप صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : तुम "उम्मे अ़ब्दुल्लाह" हो ।[2] नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَیْہِ اَفْضَلُ الصَّلٰوۃِ وَالتَّسْلِیْم के दौरे मुबारक में कई सह़ाबिय्यात अपनी कुन्यत से मश्हूर थीं जैसे उम्मे स-लमा, उम्मे मा'बद, उम्मे ह़राम, उम्मे फ़ज़्ल, उम्मे सुलैम और उम्मे हानी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْھُنَّ ।

مدینہ

1 ... اُسْدُ الْغَابَۃ، حرف الباء، باب الباء والکاف، رقم ۵۷۳۰، ابوبکر الصدیق، ۶/۴۱ ملخصاً

2 ... ابنِ ماجہ، کتاب الادب، باب الرجل یکنی قبل ان یولد لہ، ۴/۲۲۱، حدیث: ۳۷۳۹

www.dawateislami.net

उम्मे मा'बद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का क़बूले इस्लाम

अ़र्ज़ : आप ने जिन सह़ाबिय्यात का ज़िक्र फ़रमाया है उन में से ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मा'बद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का अस्ल नाम और इन की सीरत का कोई वाक़िआ़ बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मा'बद अल ख़ुज़ाइ़य्या رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का नाम ''आ़तिका बिन्ते ख़ालिद ख़ुज़ाइ़य्या'' ।[1] है इन के इस्लाम लाने का वाक़िआ़ बड़ा दिलचस्प है, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना ह़िज़ाम बिन हिशाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ फ़रमाते हैं कि जब सरकारे आ़ली वक़ार صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ के साथ मक्कए मुकर्रमा زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا से हिजरत फ़रमा कर मदीनए मुनव्वरह زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعۡظِیۡمًا तशरीफ़ ला रहे थे तो रास्ते में एक मक़ाम पर उम्मे मा'बद आ़तिका बिन्ते ख़ालिद ख़ुज़ाइ़य्या के हां गुज़र हुवा जो कि एक अ़फ़ीफ़ा (पाक दामन) और ज़ईफ़ुल उ़म्र ख़ातून थीं । येह अपने ख़ैमे में बैठी रहती थीं, मुसाफ़िरों को पानी पिलातीं और उन्हें खाना खिलाती थीं । अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہ ने उन से गोश्त और खजूरें ख़रीदने का इरादा किया लेकिन उन के पास किसी चीज़ को न पाया क्यूं कि येह काफ़ी अ़र्से से क़ह़त़ ज़दा थीं । नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन

مدینہ

1 ... الاستیعاب، کتاب کُنَی النساء، باب المیم، ۴/۵۱۳

www.dawateislami.net

के ख़ैमे में एक बकरी को देखा, फ़रमाया : उम्मे मा'बद ! येह बकरी कैसी है ? अ़र्ज़ किया कि येह कमज़ोरी की वज्ह से रेवड़ के साथ चरने के लिये नहीं जा सकती। फ़रमाया : क्या येह बकरी दूध देती है ? अ़र्ज़ किया : येह निहायत लाग़र व कमज़ोर बकरी है। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : क्या तुम मुझे इजाज़त देती हो कि मैं इस का दूध दोह लूं ? उन्हों ने अ़र्ज़ किया : मेरे मां बाप आप पर क़ुरबान ! अगर आप इस में कुछ दूध देखते हैं तो आप दोह लीजिये। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने दुआ़ फ़रमाई और उस बकरी के थनों पर अपना दस्ते मुबारक फैरा और **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का नाम लिया। बकरी ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के लिये दोनों टांगें कुशादा कर दीं और दूध उतर आया। आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बड़ा बरतन त़लब फ़रमाया जो एक गुरौह या जमाअ़त को सैराब कर दे। उस में दूध दोह कर भर दिया यहां तक कि उस पर झाग ज़ाहिर हो गई। फिर सब लोगों ने सैर हो कर पिया और आख़िर में आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने नोश फ़रमाया। दूसरी मर्तबा फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बकरी का दूध दोहना शुरूअ़ किया यहां तक कि बरतन भर गया। फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (दूध के भरे) बरतन को उन के ह़वाले किया और रवाना हो गए। थोड़ी देर बा'द उम्मे मा'बद का ख़ावन्द ऐसी कमज़ोर बकरियों को हांक कर लाया जो

www.dawateislami.net

कमज़ोरी की वज्ह से गिरती पड़ती थीं और उन की हड्डियों में मग़्ज़ भी बहुत कम था। अबू मा'बद ने जब दूध से भरा बरतन देखा तो हैरान रह गया और हैरान हो कर पूछने लगा : ऐ उम्मे मा'बद ! येह कहां से आया ? हालां कि हमारी बकरियां चरागाह से दूर हैं इन में न तो कोई बकरी हामिला है और न ही घर में कोई ऐसी बकरी है जिस में दूध हो। उन्हों ने कहा : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की क़सम ! हमारे हां एक मुबारक आदमी गुज़रे हैं उन का हाल ऐसा ऐसा है।

अबू मा'बद ने कहा कि उस शख़्स के औसाफ़ मेरे सामने बयान करो। उम्मे मा'बद ने कहा : ''मैं ने एक शख़्स देखा, जिस का हुस्न नुमायां, चेहरा हसीन, डेल डोल ख़ूब सूरत, न बड़े पेट का ऐब, न छोटे सर का नक़्स, इन्तिहाई ख़ूब सूरत, ख़ूब रू आंखें, सियाह और बड़ी पल्कें, दराज़ शीरीं और गूंजदार आवाज़, गरदन बुलन्द, रीश मुबारक घनी, अबरू ख़मीदा और दरमियान से पैवस्ता, ख़ामोश रहे तो बा वक़ार, लब कुशा हो तो चेहरे पर बहार और वक़ार, सब से बढ़ कर बा जमाल, दूरो नज़्दीक से हसीनो जमील, शीरीं ज़बां, गुफ़्त-गू साफ़ और वाज़ेह, न बे फ़ाएदा और न बेहूदा, दहान सुख़न वा (या'नी गुफ़्त-गू) करे तो मोती झड़ें, मियाना क़द, न लम्बा तड़ंगा कि दराज़ क़ामती बुरी लगे, न पस्त कि आंखों में हक़ारत पैदा हो, दो सर सब्ज़ो शादाब शाख़ों के दरमियान लचक्ती हुई शाख़ जो हसीन मन्ज़र और आ़ली

www.dawateislami.net

क़द्र हो, उस के ख़ुद्दाम व रु-फ़क़ा ह़ल्क़ा बस्ता, अगर लब कुशा हो तो वोह ग़ौर से सुनें औस अगर हुक्म दे तो ता'मील के लिये दौड़ें, क़ाबिले रश्क, क़ाबिले एह़तिराम, न तल्ख़ रू, न ज़ियादती करने वाला।" येह औसाफ़ सुन कर अबू मा'बद बे साख़्ता बोल पड़ा : ख़ुदा की क़सम ! तुम ने जिस शख़्स के औसाफ़ बयान किये हैं येह तो वोही क़ुरैश के सरदार हैं जिन का चरचा हो रहा है। मैं ने उन की सोह़बत इख़्तियार करने का क़स्द कर लिया है और अगर मैं ने उन तक पहुंचने की राह पाई तो मैं ऐसा ज़रूर करूंगा। (फिर वोह दोनों मियां बीवी मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَّتَعْظِيْمًا पहुंच कर मुसल्मान हो गए और वहीं सुकूनत इख़्तियार कर ली।)[1]

ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे मा'बद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं : जिस बकरी के थनों को नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्ताने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने मस किया था, अ़र्सए दराज़ तक हमारे पास रही ह़त्ता कि 18 सिने हिजरी में ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ज़माने में जब क़ह़त़ पड़ गया और ख़ुश्क-साली की कोई ह़द न रही (जिसे आ़मुर्रमादा कहते हैं) तो (इन ह़ालात में भी) हम सुब्ह़ो शाम उस बकरी का दूध दोहते थे ह़ालां कि चारे

---

1 ... مُستدرک حاکم، من کتاب: الهجرة الاولٰی الی الحبشة، حدیث اُمِّ معبد فی الهجرة...الخ، ۳/۵۴۲-۵۴۵، حدیث: ۴۳۳۳ ملخصاً

www.dawateislami.net

का एक तिन्का भी ज़मीन पर नज़र नहीं आता था ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! लाग़र व कमज़ोर बकरी के ख़ाली थनों से दूध निकलना, सारे बरतनों का भर जाना और सब का ख़ूब सैर हो कर पीना यक़ीनन हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का अ़ज़ीमुश्शान मो'जिज़ा है, फिर इस की ब-र-कत से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने उम्मे मा'बद और अबू मा'बद को दौलते ईमान से नवाज़ दिया । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को इतने ज़ियादा औसाफ़ो कमालात से नवाज़ा है जो कि ह़द्दो शुमार से बाहर हैं। मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت बारगाहे रिसालत में अ़र्ज़ करते हैं :

तेरे तो वस्फ़ ''ऐबे तनाही'' से हैं बरी
हैरां हूं मेरे शाह मैं क्या क्या कहूं तुझे

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का राहे ख़ुदा में सफ़र

अ़र्ज़ : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का नाम क्या था ? नीज़ इन की सीरत का एक वाक़िआ़ बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे ह़राम बिन्ते मिल्ह़ान رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا का नाम ''ग़ुमैसा या रुमैसा'' बताया गया है ।[2] येह वोह सह़ाबिया हैं जिन्हें अपने शोहर ह़ज़रते सय्यिदुना उ़बादा बिन

---

1 ... طبقاتِ کبریٰ، ۸/۲۲۵

2 ... تھذیب التھذیب، الکنی من النساء، حرف الحاء، ۱۰/۵۱۵

www.dawateislami.net

सामित رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ के साथ राहे ख़ुदा में सफ़र करने की सआ़दत ह़ासिल हुई और इसी सफ़र में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا का इन्तिक़ाल हो गया जिस की ख़बर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन की ज़िन्दगी में ही उन्हें दे दी थी चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना अबू त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि इन्हों ने ह़ज़रते सय्यिदुना अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ को फ़रमाते हुए सुना कि रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم जब क़ुबा की त़रफ़ तशरीफ़ ले जाते तो उम्मे ह़राम बिन्ते मिल्ह़ान رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا के हां क़दम रन्जा फ़रमाया करते और वोह हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में खाना पेश करतीं ।

एक बार रसूले करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم इन के हां तशरीफ़ ले गए, इन्हों ने आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم को खाना खिलाया तो इस के बा'द आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सो गए कुछ देर के बा'द मुस्कुराते हुए बेदार हुए । फ़रमाती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! आप किस बात पर मुस्कुरा रहे हैं ? इर्शाद फ़रमाया : ''मेरी उम्मत के कुछ लोग राहे ख़ुदा में जिहाद करते हुए मेरे सामने पेश हुए जो तख़्त नशीन बादशाहों की त़रह़ इस समुन्दर के बीच में सुवार होंगे ।'' कहती हैं : मैं ने अ़र्ज़ की : या **रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ! दुआ़ फ़रमाइये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मुझे भी उन में शामिल

www.dawateislami.net

फ़रमा दे, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मेरे लिये दुआ फ़रमाई इस के बा'द आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم दोबारा आराम फ़रमा हो गए, फिर मुस्कुराते हुए बेदार हुए, मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! किस चीज़ ने आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم को हंसाया ? इर्शाद फ़रमाया : "मेरी उम्मत के कुछ लोग राहे ख़ुदा में जिहाद करते हुए मेरे सामने पेश किये गए जो तख़्त नशीन बादशाहों की त़रह़ इस समुन्दर के बीच में सुवार होंगे। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! दुआ फ़रमाइये कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ मेरा शुमार भी उन्हीं में कर दे, फ़रमाया : तू पहले वालों में है। चुनान्चे उम्मे ह़राम رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهَا ह़ज़रते सय्यिदुना मुआ़विया बिन अबू सुफ़्यान رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْه के ज़माने में समुन्दर में सुवार हो कर गईं और समुन्दर से निकलने के बा'द अपनी सुवारी से गिर पड़ीं और वफ़ात पा गईं।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि उन सह़ाबिय्यात رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُنَّ को दीने इस्लाम की ख़ातिर क़ुरबानी देने का किस क़दर जज़्बा था कि दीन के कामों में न सिर्फ़ अपने बच्चों के अब्बू की मुआ़विन व मददगार होतीं बल्कि उन के साथ राहे ख़ुदा में हम-रिकाबी और जिहाद में शिर्कत की

مدینہ

1 ... بخاری، کتاب الاستئذان، باب من زار قومًا فقال عندھم، ۴/۱۸۳، حدیث: ۶۲۸۲

www.dawateislami.net

सआ़दत से भी बहरा वर होती थीं । **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उन के सदक़े हमें भी दीने इस्लाम की ख़ातिर क़ुरबानी देने का जज़्बा नसीब फ़रमाए ।

اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالٰی علیہ واٰلہٖ وسلَّم

उम्मे फ़ज़्ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا को बिशारत

अ़र्ज़ : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे फ़ज़्ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का भी अस्ल नाम और इन के मु-तअ़ल्लिक़ कोई वाक़िआ़ बयान फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे फ़ज़्ल बिन्ते ह़ारिसा हिलालिया رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا का नाम "लुबा-बतुल कुब्रा" है ।[1] येह नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم की चची और ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہ की ज़ौजा हैं । सरकारे अबद क़रार, बि इज़्ने परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार, दो आ़लम के मालिको मुख़्तार صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इन्हें ग़ैब की ख़बर देते हुए बेटा पैदा होने की बिशारत दी थी, चुनान्चे ह़ज़रते सय्यिदुना **अ़ब्दुल्लाह** इब्ने अ़ब्बास رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا फ़रमाते हैं कि मुझ से (मेरी वालिदा) ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे फ़ज़्ल رَضِیَ اللہُ تَعَالٰی عَنْہَا ने ह़दीस बयान फ़रमाई कि मैं नबिय्ये करीम صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के पास से गुज़री । आप

مدینہ

1 ... اَلْاَعْلام، حرف الفاء، ۵/۱۴۶

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने (ग़ैब की ख़बर देते हुए) इर्शाद फ़रमाया कि ''तू ह़ामिला है और तेरे पेट में लड़का है जब वोह पैदा हो उसे मेरे पास ले आना। ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे फ़ज़्ल رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا कहती हैं कि जब मेरे हां लड़के की विलादत हुई तो मैं उसे नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ले कर ह़ाज़िर हो गई, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उस के दाएं कान में अज़ान और बाएं कान में इक़ामत कही, अपने लुआ़बे दहन से घुट्टी दी, उस का नाम **अ़ब्दुल्लाह** रखा और इर्शाद फ़रमाया : ''اِذْهَبِیْ بِاَبِی الْخُلَفَاء'' या'नी ख़ु-लफ़ा के बाप को ले जा।'' मैं ने अ़ब्बास (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْه) को सारे मुआ़-मले से आगाह कर दिया, वोह एक अच्छा लिबास पहनने वाले थे, उन्हों ने लिबास ज़ैबे तन किया और नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हो गए। जब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने उन्हें देखा तो उन की ख़ातिर खड़े हुए और उन की दोनों आंखों के दरमियान बोसा दिया। उन्हों ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! वोह क्या बात है जिस की उम्मे फ़ज़्ल (رَضِیَ اللهُ تَعَالٰی عَنْهَا) ने मुझे ख़बर दी है ? इर्शाद फ़रमाया : बात वोही है जो हम ने उन से कही कि येह (तुम्हारा बेटा) ख़ु-लफ़ा का बाप है, यहां तक कि उन ख़ु-लफ़ा में से सफ़्फ़ाह़ होगा, यहां तक कि उन में से मह्दी होगा, यहां तक कि उन में से वोह होगा जो ईसा बिन मरयम عَلٰی نَبِیِّنَا وَعَلَیْهِ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के साथ

www.dawateislami.net

नमाज़ पढ़ेगा ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने कि हमारे प्यारे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ब अ़त़ाए परवर दगार ग़ैबों पर ख़बरदार हैं, आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने न सिर्फ़ पेट के अन्दर बच्चा होने के बारे में ग़ैब की ख़बर इर्शाद फ़रमा दी बल्कि उस का बेटा होना भी बता दिया नीज़ उन की आने वाली नस्लों में अ़ब्बासी ख़ु-लफ़ा की पेशीन गोई फ़रमाते हुए उन के नाम तक इर्शाद फ़रमा दिये । मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن फ़रमाते हैं :

और कोई ग़ैब क्या तुम से निहां हो भला
जब न ख़ुदा ही छुपा तुम पे करोड़ों दुरूद

(ह़दाइक़े बख़्शिश)

उ़-लमा के फ़ज़ाइल

अ़र्ज़ : क़ुरआनो ह़दीस की रोशनी में उ़-लमा के कुछ फ़ज़ाइल इर्शाद फ़रमा दीजिये ।

इर्शाद : क़ुरआनो ह़दीस में उ़-लमा के बे शुमार फ़ज़ाइल बयान हुए हैं, इन की फ़ज़ीलतो अ़-ज़मत क़ियामत के दिन खुलेगी जब आ़म लोगों को ह़िसाबो किताब के लिये रोका जाएगा और उ़-लमा को इन की शफ़ाअ़त के लिये रोका जाएगा ।

مدینہ

1 ... دلائل النبوۃ لابی نعیم، الفصل السادس والعشرون، ص۳۲۹، حدیث: ۴۸۷

www.dawateislami.net

उ-लमा के फ़ज़ाइल पर मुश्तमिल तीन आयाते मुबा-रका मुला-हज़ा फ़रमाइये :

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ-लमा को दीगर लोगों पर फ़ज़ीलत व बर-तरी अ़ता फ़रमाई है लिहाज़ा ग़ैरे उ-लमा (न जानने वाले) उ-लमा (जानने वालों) के बराबर नहीं हो सकते चुनान्चे पारह 23 **सू-रतुज़्ज़ुमर** की आयत नम्बर 9 में इर्शादे रब्बुल इ़बाद है :

قُلْ هَلْ يَسْتَوِي الَّذِيْنَ يَعْلَمُوْنَ وَالَّذِيْنَ لَا يَعْلَمُوْنَ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : तुम फ़रमाओ क्या बराबर हैं जानने वाले और अन्जान ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ-लमा के द-रजे बुलन्द फ़रमाए हैं चुनान्चे पारह 28 **सू-रतुल मुजा-दलह** की आयत नम्बर 11 में ख़ुदाए रह़मान عَزَّوَجَلَّ का फ़रमाने आ़लीशान है :

يَرْفَعِ اللّٰهُ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مِنْكُمْ ۙ وَالَّذِيْنَ اُوْتُوا الْعِلْمَ دَرَجٰتٍ ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** तुम्हारे ईमान वालों के और उन के जिन को इ़ल्म दिया गया द-रजे बुलन्द फ़रमाएगा ।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने उ-लमा के दिलों में अपना ख़ौफ़ रखा है चुनान्चे पारह 22 **सू-रतुल फ़ातिर** की आयत नम्बर 28 में इर्शाद होता है :

اِنَّمَا يَخْشَى اللّٰهَ مِنْ عِبَادِهِ الْعُلَمٰٓؤُا ؕ

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : **अल्लाह** से उस के बन्दों में वोही डरते हैं जो इ़ल्म वाले हैं ।

www.dawateislami.net

अह़ादीसे मुबा-रका में भी उ-लमा के फ़ज़ाइल बयान किये गए हैं चुनान्चे फ़ज़ाइले उ-लमा पर मुश्तमिल 4 अह़ादीसे मुबा-रका मुला-ह़ज़ा फ़रमाइये :

(1) नबियों के सुल्त़ान, रह़मते आ-लमिय्यान, सरदारे दो जहान صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : आ़लिम की फ़ज़ीलत आ़बिद पर ऐसी है जैसी मेरी फ़ज़ीलत तुम्हारे अदना पर, फिर आप صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : बेशक **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ, उस के फ़िरिश्ते, आस्मान और ज़मीन की मख़्लूक़ यहां तक कि च्यूंटियां अपने सूराख़ों में और मछलियां (पानी में) लोगों को नेकी सिखाने वाले पर ''सलात'' भेजते हैं।[1] मुफ़स्सिरे शहीर, ह़कीमुल उम्मत मुफ़्ती अह़मद यार ख़ान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّان फ़रमाते हैं : **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की ''सलात'' से उस की ख़ास रह़मत और मख़्लूक़ की ''सलात'' से ख़ुसूसी दुआए रह़मत मुराद है।[2]

(2) हुज़ूरे अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुअ़ज़्ज़म है : एक फ़क़ीह हज़ार आ़बिदों से ज़ियादा शैत़ान पर सख़्त है।[3]

(3) ख़ा-तमुल मुर-सलीन, रह़मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : उ-लमा की सियाही शहीद के ख़ून से तोली जाएगी और उस पर ग़ालिब

---

1 ... ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/۳۱۳-۳۱۴، حدیث: ۲۶۹۴ ماخوذاً

2 ..... मिरआतुल मनाजीह़, जि. 1, स. 200

3 ... ترمذی، کتاب العلم، باب ماجاء فی فضل الفقہ علی العبادۃ، ۴/۳۱۱-۳۱۲، حدیث: ۲۶۹۰

www.dawateislami.net

हो जाएगी ।[1]

(4) सरकारे आ़ली वक़ार, मदीने के ताजदार صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने मुश्कबार है : बेशक उ़-लमा की मिसाल ज़मीन में ऐसी है जैसे आस्मान में सितारे, जिन से खुश्की और समुन्दर की तारीकियों में रास्ते का पता चलता है लिहाज़ा अगर सितारे मिट जाएं तो क़रीब है कि रास्ता चलने वाले भटक जाएंगे ।[2]

आ़लिमे दीन की ज़ियारत इ़बादत है

अ़र्ज़ : क्या आ़लिमे दीन की ज़ियारत करना इ़बादत है ?

इर्शाद : जी हां ! आ़लिमे दीन की ज़ियारत करना इ़बादत है जैसा कि ह़दीसे पाक में है कि इमामुल आ़बिदीन, सुल्त़ानुस्साजिदीन, सय्यिदुस्सालिह़ीन صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का फ़रमाने दिल नशीन है : पांच चीज़ें इ़बादत हैं : (1) कुरआने करीम की ज़ियारत करना (2) का'बए मुअ़ज़्ज़मा की ज़ियारत करना (3) वालिदैन की ज़ियारत करना (4) आबे ज़मज़म की ज़ियारत करना और येह ख़त़ाओं को मिटा देता है (5) आ़लिम के चेहरे की ज़ियारत करना ।[3]

مدینہ

1... تاریخ بغداد، حرف الحا، ذکر من اسمہ محمد واسم ابیہ الحسن، محمد بن الحسن بن ازھر ... الخ، ۲/۱۹۰، حدیث: ۶۱۸

2... مسند امام احمد، مسند انس بن مالک، ۴/۳۱۴، حدیث: ۱۲۶۰۰

3... کنز العمال، الکتاب الخامس من حرف المیم فی المواعظ والحکم، الباب الاول فی المواعظ والترغیبات، الفصل الخامس فی خماسیات الترغیب، الجزء:۱۵، ۸/۳۷۱، حدیث: ۴۳۴۸۷

www.dawateislami.net

आ़लिम की सोह़बत इख़्तियार करने के फ़वाइद

अ़र्ज़ : आ़लिमे दीन की सोह़बत इख़्तियार करने से क्या फ़वाइदो स-मरात ह़ासिल होते हैं ?

इर्शाद : आ़लिमे दीन की सोह़बत इख़्तियार करने के फ़वाइदो स-मरात बयान करते हुए ह़ज़रते सय्यिदुना फ़क़ीह अबुल्लैस नस्र बिन मुह़म्मद समर क़न्दी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِی फ़रमाते हैं : जो शख़्स आ़लिम की मजलिस में गया, बैठा अगर कुछ ह़ासिल करने की त़ाक़त न भी थी तो भी उसे 7 इ़ज़्ज़तें ह़ासिल होंगी : (1) त़ालिबे इ़ल्मों की सी फ़ज़ीलत पाएगा (2) जब तक वहां बैठा रहेगा गुनाहों से बचा रहेगा (3) घर से निकलते ही उस पर रह़मत का फ़ैज़ान शुरूअ़ हो जाएगा (4) उन की मइ़य्यत (साथ होने) में उन पर नाज़िल होने वाली रह़मतों से नवाज़ा जाएगा (5) जब तक सुनता रहेगा नेकियां लिखी जाती रहेंगी (6) उ़-लमा की मह़फ़िल की ब-र-कत की वज्ह से फ़िरिश्ते उसे रिज़ाए इलाही के परों से ढांपे रखेंगे (7) इस का हर उठता क़दम गुनाहों का कफ़्फ़ारा, बुलन्दिये द-रजात का बाइ़स और नेकियों में इज़ाफ़े का सबब बनेगा। फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे मज़ीद छ⁶ इन्आ़मात से नवाज़ेगा।

(1) उ़-लमा की मजलिस को पसन्द करने की वज्ह से **अल्लाह** तआ़ला उसे करामत अ़ता फ़रमाएगा (2) जो भी

www.dawateislami.net

इस की पैरवी करेगा तो उन की नेकियों में कमी किये बिग़ैर उतना ही सवाब उसे ह़ासिल होगा (3) उन में से किसी की बख़्शिश की गई तो इस की शफ़ाअ़त करेगा (4) बदकारों की मह़फ़िल से उस का दिल उक्ता जाएगा । (5) त़-लबा और नेक लोगों के रास्ते में दाख़िल होगा (6) **अल्लाह** तआ़ला के अह़काम की पैरवी करने वाला होगा क्यूं कि फ़रमाने इलाही है : ﴿كُوْنُوْا رَبّٰنِيّٖنَ بِمَا كُنْتُمْ تُعَلِّمُوْنَ الْكِتٰبَ﴾ (پ۳، آلِ عمران:۷۹)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : "**अल्लाह** वाले हो जाओ इस सबब से कि तुम किताब सिखाते हो ।" येह सब इ़ज़्ज़तें तो उस शख़्स को ह़ासिल होंगी जिस ने कुछ याद न किया, जिस ने सीख कर याद भी किया उसे कई गुना अज्र मिलेगा ।[1]

नमाज़ पढ़ कर मुसल्ले का कोना लपेटने की वज्ह

अ़र्ज़ : अक्सर लोग नमाज़ पढ़ कर जब उठते हैं तो मुसल्ले का कोना उलट देते हैं, इस में क्या ह़िक्मत है ? बा'ज़ लोग कहते हैं जिस मुसल्ले का कोना उल्टा न किया जाए उस पर शैत़ान नमाज़ पढ़ता है, येह कहां तक दुरुस्त है ?

इर्शाद : नमाज़ पढ़ने के बा'द मुसल्ले का कोना उलट देने में कोई ह़रज नहीं, बेहतर येह है कि पूरा लपेट दिया जाए, अलबत्ता येह ख़याल करना कि जिस मुसल्ले का कोना उल्टा न किया जाए उस पर शैत़ान नमाज़ पढ़ता है इस की कोई ह़क़ीक़त नहीं चुनान्चे सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत़्त़रीक़ह ह़ज़रते अ़ल्लामा

1 ... تَنْبِيْهُ الْغَافِلِيْن، ص۲۳۷-۲۳۸

www.dawateislami.net

मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَيْهِ رَحمَةُ اللهِ الْقَوِى फ़रमाते हैं : नमाज़ पढ़ने के बा'द मुसल्ले को लपेट कर रख देते हैं, येह अच्छी बात है कि इस में ज़ियादा एह़तियात़ है, मगर बा'ज़ लोग जा नमाज़ का सिर्फ़ कोना लौट (मोड़) देते हैं और येह कहते हैं कि ऐसा न करने में इस पर शैत़ान नमाज़ पढ़ेगा, येह बे अस्ल है ।[1]

इसी त़रह़ का एक सुवाल जब मेरे आक़ा आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत मौलाना शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَيْهِ رَحمَةُ الرَّحْمٰن से हुवा कि ''अक्सर दीहात में नमाज़ पढ़ कर जब उठते हैं कोना मुसल्ला का उलट देते हैं इस का शरअ़न सुबूत है या नहीं ?'' तो आप رَحْمَةُ اللهِ تَعَالٰى عَلَيْه ने जवाबन तीन अह़ादीस नक़्ल फ़रमाईं : ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि रसूले अकरम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : शैत़ान तुम्हारे कपड़े अपने इस्ति'माल में लाते हैं तो तुम में से जब कोई अपना कपड़ा उतारे तो उसे चाहिये कि वोह उसे तह कर दिया करे कि इस का दम रास्त हो जाए कि शैत़ान तह किये हुए कपड़े नहीं पहनता ।[2]

ह़ज़रते सय्यिदुना जाबिर बिन **अ़ब्दुल्लाह** رَضِیَ اللهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से रिवायत है कि नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम عَلَيْهِ اَفْضَلُ الصَّلٰوةِ وَالتَّسْلِيْم

مدینہ

1 ..... बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 16, स. 499

2 ... جامع صغیر، حرف الشین، ص۳۰۵، حدیث: ۴۹۶۶

www.dawateislami.net

ने इर्शाद फ़रमाया : कपड़े लपेट दिया करो इन की जान में जान आ जाए इस लिये कि शैत़ान जिस कपड़े को लिपटा हुवा देखता है उसे नहीं पहनता और जिसे फैला हुवा पाता है उसे पहनता है ।[1] **रसूलुल्लाह** صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जहां कोई बिछोना बिछा हो जिस पर कोई सोता न हो उस पर शैत़ान सोता है ।[2]

मज़्कूरा अह़ादीसे मुबा-रका नक़्ल करने के बा'द आ'ला ह़ज़रत عَلَيْهِ رَحْمَةُ رَبِّ الْعِزَّت इर्शाद फ़रमाते हैं : '' इन अह़ादीस से इस (मुसल्ले का कोना उलट देने) की अस्ल निकल सकती है और पूरा लपेट देना बेहतर है ।''[3]

मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त लोगों को सलाम करना

अ़र्ज़ : मस्जिद में दाख़िल हो कर लोगों को सलाम करना चाहिये या नहीं ?

इर्शाद : दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 498 पर है : जब मस्जिद में दाख़िल हो तो सलाम करे बशर्ते कि जो लोग वहां मौजूद हैं (वोह) ज़िक्रो दर्स में मश्ग़ूल न हों और अगर वहां कोई न हो

مدینہ

1 ... مُعْجَمِ اَوْسَط، باب المیم، من اسمہ محمد، ۴/۱۹۸، حدیث: ۵۷۰۲

2 ... موسوعۃ اِبْنِ اَبِی الدُّنْیا، مکائد الشیطان، الباب الاول، ۴/۵۳۰، رقم: ۵

3 ..... फ़तावा र-ज़विय्या, जि. 6, स. 206

www.dawateislami.net

या जो लोग हैं वोह मश्ग़ूल हैं तो यूं कहे : اَلسَّلَامُ عَلَيْنَا مِنْ رَّبِّنَا وَعَلٰى عِبَادِ اللّٰهِ الصّٰلِحِيْن ।

सलाम न करने की मुख़्तलिफ़ सूरतें

अ़र्ज़ : किन सूरतों में सलाम नहीं करना चाहिये ?

इर्शाद : फ़ु-क़हाए किराम رَحِمَهُمُ اللّٰهُ السَّلَام ने सलाम न करने की कई सूरतें बयान फ़रमाई हैं, चुनान्चे दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1197 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब **बहारे शरीअ़त** जिल्द सिवुम सफ़ह़ा 461 ता 463 पर है : कुफ़्फ़ार को सलाम न करे और वोह सलाम करें तो जवाब दे सकता है मगर जवाब में सिर्फ़ "عَلَيْكُم" कहे अगर ऐसी जगह गुज़रना हो जहां मुस्लिम व काफ़िर दोनों हों तो "اَلسَّلَامُ عَلَيْكُم" कहे और मुसल्मानों पर सलाम का इरादा करे और येह भी हो सकता है कि "اَلسَّلَامُ عَلٰى مَنِ اتَّبَعَ الْهُدٰى" कहे ।[1]

काफ़िर को अगर ह़ाजत की वज्ह से सलाम किया, म-सलन सलाम न करने में इस से अन्देशा है तो ह़रज नहीं और ब क़स्दे ता'ज़ीम काफ़िर को हरगिज़ हरगिज़ सलाम न करे कि काफ़िर की ता'ज़ीम कुफ़्र है ।[2]

مدینہ

1 ... فتاویٰ هندية، كتاب الكراهية، الباب السابع فى السلام وتشميت العاطس، ٣٢٥/٥ ملخصاً

2 ... دُرِّمختار و رَدُّالمحتار، كتاب الحظر والإباحة، فصل فى البيع، ٦٨١/٩

www.dawateislami.net

सलाम इस लिये है कि मुलाक़ात करने को जो शख़्स आए वोह सलाम करे कि ज़ाइर और मुलाक़ात करने वाले को येह तह़िय्यत है लिहाज़ा जो शख़्स मस्जिद में आया और ह़ाज़िरीने मस्जिद तिलावते कु़रआन व तस्बीह़ व दुरूद में मश्ग़ूल हैं या इन्तिज़ारे नमाज़ में बैठे हैं तो सलाम न करे कि येह सलाम का वक़्त नहीं। इसी वासिते फ़ु-क़हा येह फ़रमाते हैं कि इन को इख़्तियार है कि जवाब दें या न दें। हां अगर कोई शख़्स मस्जिद में इस लिये बैठा है कि लोग इस के पास मुलाक़ात को आएं तो आने वाले सलाम करें।[1]

कोई शख़्स तिलावत में मश्ग़ूल है या दर्सो तदरीस या इ़ल्मी गुफ़्त-गू या सबक़ की तक्रार में है तो उस को सलाम न करे। इसी त़रह़ अज़ानो इक़ामत व ख़ुत़्बए जुमुआ़ व ई़दैन के वक़्त सलाम न करे। सब लोग इ़ल्मी गुफ़्त-गू कर रहे हों या एक शख़्स बोल रहा है बाक़ी सुन रहे हों, दोनों सूरतों में सलाम न करे म-सलन आ़लिम वा'ज़ कह रहा है या दीनी मस्अले पर तक़्रीर कर रहा है और ह़ाज़िरीन सुन रहे हैं, आने वाला शख़्स चुपके से आ कर बैठ जाए सलाम न करे।[2]

आ़लिमे दीन ता'लीमे इ़ल्मे दीन में मश्ग़ूल है, त़ालिबे इ़ल्म आया तो सलाम न करे और सलाम किया तो उस पर जवाब

مدینہ

1... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/۳۲۵

2... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/ ۳۲۵-۳۲۶

www.dawateislami.net

देना वाजिब नहीं ।[1] और येह भी हो सकता है कि अगर्चे वोह पढ़ा न रहा हो सलाम का जवाब देना वाजिब नहीं क्यूं कि येह उस की मुलाक़ात को नहीं आया है कि इस के लिये सलाम करना मस्नून हो बल्कि पढ़ने के लिये आया है, जिस त़रह़ क़ाज़ी के पास जो लोग इज्लास में जाते हैं वोह मिलने को नहीं जाते बल्कि अपने मुक़द्दमे के लिये जाते हैं ।

जो शख़्स ज़िक्र में मश्ग़ूल हो उस के पास कोई शख़्स आया तो सलाम न करे और किया तो ज़ाकिर (या'नी ज़िक्र करने वाले) पर जवाब वाजिब नहीं ।[2]

जो शख़्स पेशाब पाख़ाना कर रहा है या कबूतर उड़ा रहा है या गा रहा है या ह़म्माम या ग़ुस्ल ख़ाने में नंगा नहा रहा है, उस को सलाम न किया जाए और उस पर जवाब देना वाजिब नहीं ।[3] पेशाब के बा'द ढेला ले कर इस्तिन्जा सुखाने के लिये टहलते हैं, येह भी उसी हुक्म में है कि पेशाब कर रहा है ।

जो शख़्स अ़लानिया फ़िस्क़ करता हो उसे सलाम न करे, किसी के पड़ोस में फ़ुस्साक़ रहते हैं मगर उन से येह अगर सख़्ती बरत्ता है तो वोह इस को ज़ियादा परेशान करेंगे और

مدینہ

1 ... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/۳۲۶

2 ... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/۳۲۶

3 ... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام وتشمیت العاطس، ۵/۳۲۶

www.dawateislami.net

नरमी करता है उन से सलाम जारी रखता है तो वोह ईज़ा पहुंचाने से बाज़ रहते हैं तो उन के साथ ज़ाहिरी तौ़र पर मेलजोल रखने में येह मा'ज़ूर है ।[1]

जो लोग शत़रन्ज खेल रहे हों उन को सलाम किया जाए या न किया जाए, जो उ़-लमा सलाम करने को जाइज़ फ़रमाते हैं वोह येह कहते हैं कि सलाम इस मक़्सद से करे कि इतनी देर तक कि वोह जवाब देंगे, खेल से बाज़ रहेंगे । येह सलाम उन को मा'सियत से बचाने के लिये है, अगर्चे इतनी ही देर तक सही । जो फ़रमाते हैं कि सलाम करना ना जाइज़ है उन का मक़्सद ज़ज्रो तौबीख़ है कि इस में इन की तज़्लील है ।[2]

सोए हुए लोगों को सलाम न किया जाए । जब कुछ लोग सो रहे हों और कुछ जाग रहे हों तो जागने वालों को भी आहिस्ता आवाज़ से सलाम किया जाए ताकि उन की नींद में ख़लल वाक़ेअ़ न हो । ह़ज़रते सय्यिदुना मिक़्दाद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि ख़ल्क़ के रहबर, शाफ़ेए़ महशर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم रात को तशरीफ़ लाते तो सलाम कहते । आप صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सोने वालों को न जगाते और जो जाग रहे होते उन्हें सलाम इर्शाद फ़रमाते । पस एक दिन आप

مدینہ

1 ... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام و تشمیت العاطس، ۵/۳۲۶

2 ... فتاویٰ ھندیۃ، کتاب الکراھیۃ، الباب السابع فی السلام و تشمیت العاطس، ۵/۳۲۶

www.dawateislami.net

صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और इसी त़रह़ सलाम फ़रमाया जिस त़रह़ फ़रमाया करते थे ।[1]

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! हमारे प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सिर्फ़ जागने वालों को सलाम फ़रमाते और सोने वालों की नींद में मुख़िल होना ना मुनासिब ख़याल फ़रमाते येह सब गुलामों की तरबियत के लिये था, वरना कौन ऐसा बद नसीब होगा जिसे सरकारे अबद क़रार صَلَّى اللهُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم सलाम फ़रमाने के लिये जगाएं और उस की नींद में ख़लल वाक़ेअ़ हो ? उ़श्शाक़ का तो येह ह़ाल है :

जल्वए यार इधर भी कोई फैरा तेरा

ह़सरतें आठ पहर तक्ती हैं रस्ता तेरा

(ज़ौक़े ना'त)

सलाह़िय्यत होने के बा वुजूद ज़िम्मादारी न लेना

अ़र्ज़ : बा'ज़ इस्लामी भाई ऐसे हैं जो दा'वते इस्लामी के म-दनी माह़ोल से दिलो जान से मह़ब्बत तो करते हैं लेकिन दा'वते इस्लामी के म-दनी काम की कोई ज़िम्मादारी क़बूल नहीं करते उन का येह रवय्या कैसा है ?

مدینہ

1 ... مُسلِم، کتاب الاشربۃ، باب إکرام الضیف وفضل ایثارہ، ص۱۱۳۶-۱۱۳۷، حدیث: ۲۰۵۵ ملتقطاً

www.dawateislami.net

इर्शाद : اَلْحَمْدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ मेरा सुन्नतों का कारोबार है और दा'वते इस्लामी गोया कि मेरी दुकान है। हर दुकान दार येह चाहता है कि उस को बा सलाहिय्यत सेल्ज़मेन (Salesman) मिले ताकि उस की ज़ियादा से ज़ियादा बिकरी (या'नी कमाई) हो। मेरी भी ख़्वाहिश है कि हर बा सलाहिय्यत मुसल्मान मेरा सेल्ज़मेन (Salesman) बन जाए ताकि सारी दुन्या के लोगों को नमाज़ी और सुन्नतों का आ़दी बनाया जाए। मसाजिद आबाद हों और गुनाहों के अड्डे वीरान हों, बे पर्दगी और फ़ह्हाशी के सैलाब के आगे बन्द बांधा जाए। जो इस्लामी भाई सलाहिय्यत होने के बा वुजूद म-दनी कामों की कोई ज़िम्मादारी क़बूल नहीं करते तो भले वोह मुझे ख़ूबसूरत तह़ाइफ़ और लाखों करोड़ों रुपों के नज़राने पेश करें ऐसों से मेरा दिल ख़ुश नहीं होता क्यूं कि मुझे मालो दौलत की नहीं बल्कि म-दनी काम करने वाले इस्लामी भाइयों की ज़रूरत है। जो इस्लामी भाई दा'वते इस्लामी के म-दनी कामों के लिये कुढ़ते और ज़िम्मादारी मिलने पर बख़ुशी क़बूल करते और अह़सन त़रीक़े से उसे निभाने की कोशिश करते हैं तो ऐसे इस्लामी भाइयों से मेरा दिल ख़ुश होता है और उन के लिये मेरे दिल से दुआ़एं निकलती हैं।

तुम्हें ऐ मुबल्लिग़ ! हमारी दुआ़ है
किये जाओ त़ै तुम तरक़्क़ी का ज़ीना

(वसाइले बख़्शिश)

www.dawateislami.net

इख़्तितामे मजलिस की दुआ

अ़र्ज़ : जब किसी मजलिस में बैठ कर कसीर गुफ़्त-गू की हो या इज्तिमाअ़ का इख़्तिताम हो तो उस वक़्त कौन सी दुआ पढ़नी चाहिये ?

इर्शाद : ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ से रिवायत है कि सरकारे मदीना, राह़ते क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : जो किसी मजलिस में बैठा पस उस ने कसीर गुफ़्त-गू की तो उस मजलिस से उठने से पहले येह कहे : سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ اَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ '' या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं, मैं गवाही देता हूं कि तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं।'' तो बख़्श दिया जाएगा जो उस मजलिस में हुवा।[1]

ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ब्दुल्लाह बिन अ़म्र बिन आ़स رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ फ़रमाते हैं : जो येह दुआ़ किसी मजलिस से उठते वक़्त तीन मर्तबा पढ़े तो उस की ख़त़ाएं मिटा दी जाती हैं और जो मजलिसे ख़ैर व मजलिसे ज़िक्र में पढ़े तो उस के लिये ख़ैर (या'नी भलाई) पर मोहर लगा दी जाएगी। वोह दुआ़ येह है : سُبْحٰنَكَ اللّٰهُمَّ وَبِحَمْدِكَ لَا اِلٰهَ اِلَّا اَنْتَ اَسْتَغْفِرُكَ وَاَتُوْبُ اِلَيْكَ

مدینہ

1 ... ترمذی، کتاب الدعوات، باب ما یقول اذا قام من مجلسہ، ۵/۲۷۳، حدیث: ۳۴۴۴

www.dawateislami.net

या'नी ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ तेरी ज़ात पाक है और तेरे लिये ही तमाम ख़ूबियां हैं, तेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं, मैं तुझ से बख़्शिश चाहता हूं और तेरी त़रफ़ तौबा करता हूं ।[1] اَلْحَمْدُ لِلّٰہ عَزَّوَجَلَّ ! दा'वते इस्लामी के सुन्नतों भरे इज्तिमाआ़त और ज़िम्मादारान के म-दनी मश्वरों के इख़्तिताम पर येह दुआ़ पढ़ाई जाती है ।

सब से ज़ियादा प्यारे नाम

ह़दीसे पाक में है : **अल्लाह** तआ़ला के नज़्दीक तुम्हारे नामों में सब से ज़ियादा प्यारे नाम **अ़ब्दुल्लाह** व अ़ब्दुर्रह़मान हैं । (مسلم، ص۱۱۷۸، حدیث:۲۱۳۲) इस (ह़दीसे पाक) का मत़लब येह है कि जो शख़्स अपना नाम अ़ब्द के साथ रखना चाहता हो तो सब से बेहतर **अ़ब्दुल्लाह** व अ़ब्दुर्रह़मान हैं, वोह नाम न रखे जाएं जो जाहिलिय्यत में रखे जाते थे कि किसी का नाम अ़ब्दे शम्स और किसी का अ़ब्दुद्दार होता । लिहाज़ा येह न समझना चाहिये कि येह दोनों नाम ''मुह़म्मद व अह़मद'' से भी अफ़्ज़ल हैं क्यूं कि हुज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के इस्मे पाक ''मुह़म्मद व अह़मद'' हैं और ज़ाहिर येही है कि येह दोनों नाम ख़ुद **अल्लाह** तआ़ला ने अपने मह़बूब صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के लिये मुन्तख़ब फ़रमाए, अगर येह दोनों नाम ख़ुदा के नज़्दीक बहुत प्यारे न होते तो अपने मह़बूब के लिये पसन्द न फ़रमाया होता । (बहारे शरीअ़त, जि. 3, ह़िस्सा : 16, स. 601)

[1] ... ابوداود، کتاب الادب، باب فی کفارۃ المجلس، ۴/۳۴۷، حدیث:۴۸۵۷

www.dawateislami.net

ماخذومراجع

نمبرشمار	نام کتاب	مصنف / مؤلف	مطبوعہ
❉	قرآنِ پاک	کلام الٰہی	❉ ❉ ❉ ❉
1	کنزالایمان	اعلیٰ حضرت امام احمد رضاخان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
2	خزائن العرفان	صدرالافاضل مفتی نعیم الدین مراد آبادی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینۃ ۱۴۳۲ھ
3	روح البیان	مولی الروم شیخ اسماعیل حقی بروسی، متوفّٰی ۱۱۳۷ھ	کوئٹہ ۱۴۱۹ھ
4	صحیح البخاری	امام ابوعبداللہ محمد بن اسماعیل بخاری، متوفّٰی ۲۵۶ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
5	صحیح مسلم	امام مسلم بن حجاج قشیری نیشاپوری، متوفّٰی ۲۶۱ھ	دارابن حزم بیروت ۱۴۱۹ھ
6	سنن ابن ماجہ	امام محمد بن یزید القزوینی ابن ماجہ، متوفّٰی ۲۷۳ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
7	سنن ابی داود	امام ابوداود سلیمان بن اشعث سجستانی، متوفّٰی ۲۷۵ھ	داراحیاء التراث العربی ۱۴۲۱ھ
8	سنن الترمذی	امام محمد بن عیسیٰ ترمذی، متوفّٰی ۲۷۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
9	مُسندِ امام احمد	امام احمد بن محمد بن حنبل، متوفّٰی ۲۴۱ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۴ھ
10	المستدرک	امام ابوعبداللہ محمد بن عبداللہ حاکم، متوفّٰی ۴۰۵ھ	دارالمعرفۃ بیروت ۱۴۱۸ھ
11	جمع الجوامع	امام جلال الدین عبدالرحمٰن سیوطی شافعی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۱ھ
12	الجامع الصغیر	امام جلال الدین بن ابی بکر سیوطی، متوفّٰی ۹۱۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۵ھ
13	کنزالعمال	علامہ علاءالدین علی بن حسام الدین متقی ھندی، متوفّٰی ۹۷۵ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۹ھ
14	فردوس الاخبار	حافظ شیرویہ بن شہردار بن شیرویہ دیلمی، متوفّٰی ۵۰۹ھ	دارالفکر بیروت ۱۴۱۸ھ
15	السنن الکبریٰ	امام احمد بن شعیب نسائی، متوفّٰی ۳۰۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۱ھ

www.dawateislami.net

16	فیض القدیر	علامہ محمد عبدالرؤوف مناوی، متوفّٰی ۱۰۳۱ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲
17	مرآۃ المناجیح	حکیم الامت مفتی احمد یار خان نعیمی، متوفّٰی ۱۳۹۱ھ	ضیاء القرآن پبلی کیشنز لاہور
18	تاریخ بغداد	حافظ ابو بکر احمد بن علی بن ثابت خطیب بغدادی، متوفّٰی ۴۶۲ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۱۷
19	الموسوعۃ	حافظ ابو بکر عبداللہ بن محمد بن عبید ابن ابی الدنیا، متوفّٰی ۲۸۱ھ	المکتبۃ العصریۃ ۱۴۲۶ھ
20	اسد الغابۃ	امام ابوالحسن علی بن محمد الجزری، متوفّٰی ۶۳۰ھ	داراحیاء التراث العربی بیروت
21	الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب	ابو عمر یوسف عبداللہ بن محمد بن عبدالبر قرطبی، متوفّٰی ۴۶۳ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۴۲۲
22	الطبقات الکبریٰ	محمد بن سعد بن منیع ھاشمی، متوفّٰی ۲۳۰ھ	دارالکتب العلمیۃ بیروت ۱۹۹۷ء
23	دلائل النبوۃ	امام ابو نعیم احمد بن عبدُ اللہ الاصبھانی، متوفّٰی ۴۳۰ھ	المکتبۃ العصریۃ بیروت ۱۴۳۰ھ
24	الدر المختار	محمد بن علی المعروف بہ علاء الدین حصکفی متوفّٰی ۱۰۸۸ھ	دار المعرفۃ بیروت ۱۴۲۰ھ
25	الفتاوی الھندیہ	علامہ ہمام مولانا شیخ نظام، متوفّٰی ۱۱۶۱ھ وجماعۃ من علماء الہند	دار الفکر بیروت ۱۴۰۳ھ
26	فتاویٰ رضویہ	اعلیٰ حضرت امام احمد رضا خان، متوفّٰی ۱۳۴۰ھ	رضا فاؤنڈیشن مرکز الاولیا لاہور
27	بہارِ شریعت	صدر الشریعہ مفتی محمد امجد علی اعظمی، متوفّٰی ۱۳۶۷ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
28	ملفوظاتِ اعلیٰ حضرت	مفتی اعظم ہند محمد مصطفیٰ رضا خان، متوفّٰی ۱۴۰۲ھ	مکتبۃ المدینہ باب المدینہ کراچی
29	تھذیب التھذیب	امام حافظ احمد بن علی بن حجر عسقلانی شافعی، متوفّٰی ۸۵۲ھ	دار الفکر بیروت ۱۴۱۵ھ
30	اعلام	خیر الدین زرکلی، متوفّٰی ۱۳۹۶ھ	دار العلم للملایین ۱۹۹۵ء
31	تعریفات	سید شریف علی بن محمد بن علی الجرجانی، متوفّٰی ۸۱۶ھ	دار المنار للطباعۃ والنشر
32	تنبیہ الغافلین	فقیہ ابو اللیث نصر بن محمد سمرقندی، متوفّٰی ۳۷۳ھ	دار الکتاب العربی بیروت ۱۴۲۰ھ

www.dawateislami.net

फ़ेहरिस्त

उ़न्वान	सफ़ह़ा	उ़न्वान	सफ़ह़ा
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	2	उम्मे ह़राम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का राहे ख़ुदा में सफ़र	21
नाम कैसे रखे जाएं ?	2		
''मुह़म्मद और अह़मद'' नाम रखने के फ़ज़ाइल	5	उम्मे फ़ज़्ल رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا को बिशारत	24
नामे अक़्दस के साथ कोई दूसरा नाम न मिलाइये	8	उ़-लमा के फ़ज़ाइल	26
		आ़लिमे दीन की ज़ियारत इबादत है	29
तस्ग़ीर से बचने का त़रीक़ा	9		
त़ाहा और यासीन नाम रखना कैसा ?	10	आ़लिम की सोह़बत इख़्तियार करने के फ़वाइद	30
किसी को ''लम्बा, ठिगना, अन्धा'' कहना कैसा ?	11	नमाज़ पढ़ कर मुसल्ले का कोना लपेटने की वज्ह	31
इमामे आ'ज़म को ''अबू ह़नीफ़ा'' कहने की वज्ह	13	मस्जिद में दाख़िल होते वक़्त लोगों को सलाम करना	33
कुन्यत की ता'रीफ़	14	सलाम न करने की मुख़्तलिफ़ सूरतें	34
क्या बच्चे की कुन्यत भी रख सकते हैं ?	14	सलाहिय्यत होने के बा वुजूद ज़िम्मादारी न लेना	38
क्या औ़रत भी कुन्यत रख सकती है ?	16	इख़्तितामे मजलिस की दुआ़	40
उम्मे मा'बद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا का क़बूले इस्लाम	17	मआख़िज़ो मराजेअ़	42
		--------	44

www.dawateislami.net

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

नेक नमाज़ी बनने के लिये

हर जुमा'रात बा'द नमाज़े इशा आप के यहां होने वाले **दा'वते इस्लामी** के हफ़्तावार सुन्नतों भरे इज्तिमाअ़ में रिज़ाए इलाही के लिये अच्छी अच्छी निय्यतों के साथ सारी रात शिर्कत फ़रमाइये ۞ सुन्नतों की तरबियत के लिये **म-दनी क़ाफ़िले** में आ़शिक़ाने रसूल के साथ हर माह तीन दिन सफ़र और ۞ रोज़ाना "**फ़िक्रे मदीना**" के ज़रीए **म-दनी इन्आ़मात** का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह की पहली तारीख़ में अपने यहां के ज़िम्मेदार को जम्अ़ करवाने का मा'मूल बना लीजिये।

मेरा म-दनी मक़्सद : "**मुझे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश करनी है।** اِنْ شَآءَ اللّٰه عَزَّوَجَلَّ " अपनी इस्लाह़ के लिये "**म-दनी इन्आ़मात**" पर अ़मल और सारी दुन्या के लोगों की इस्लाह़ की कोशिश के लिये "**म-दनी क़ाफ़िलों**" में सफ़र करना है।

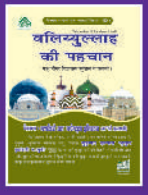

मक-त-बतुल मदीना®
दा'वते इस्लामी
फ़ैज़ाने मदीना, न्री कोनिया बग़ीचे के पास, मिरज़ापूर, अहमदआबाद-1, गुजरात, इन्डिया
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net